

संसार वृक्ष

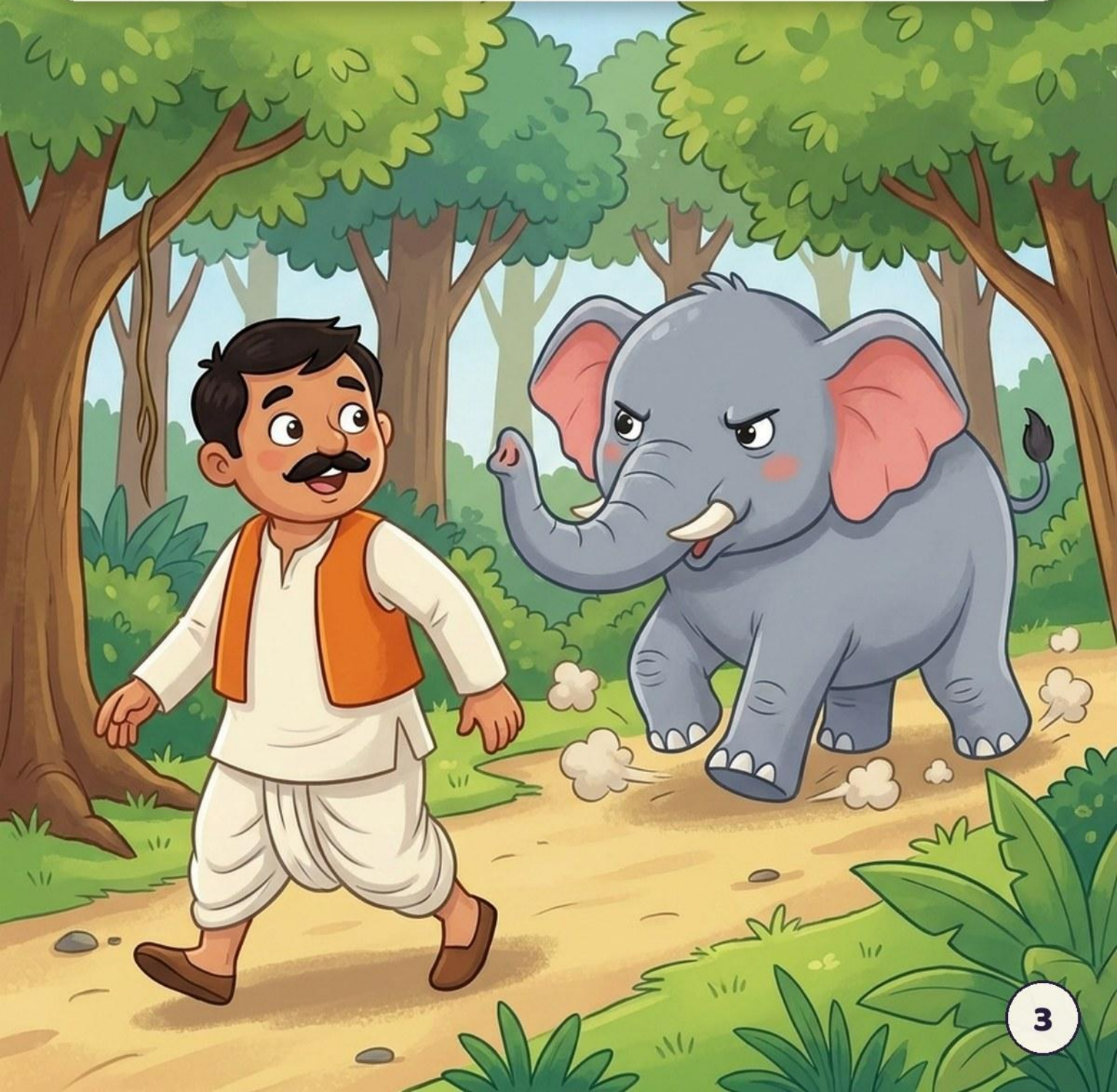
बस एक बूँद और!



चिटू ने एक लड्डू खाया, फिर बोला,
"दादी, बस एक और!"
 दादी मुस्कराई, "पहले एक कहानी सुनो..."



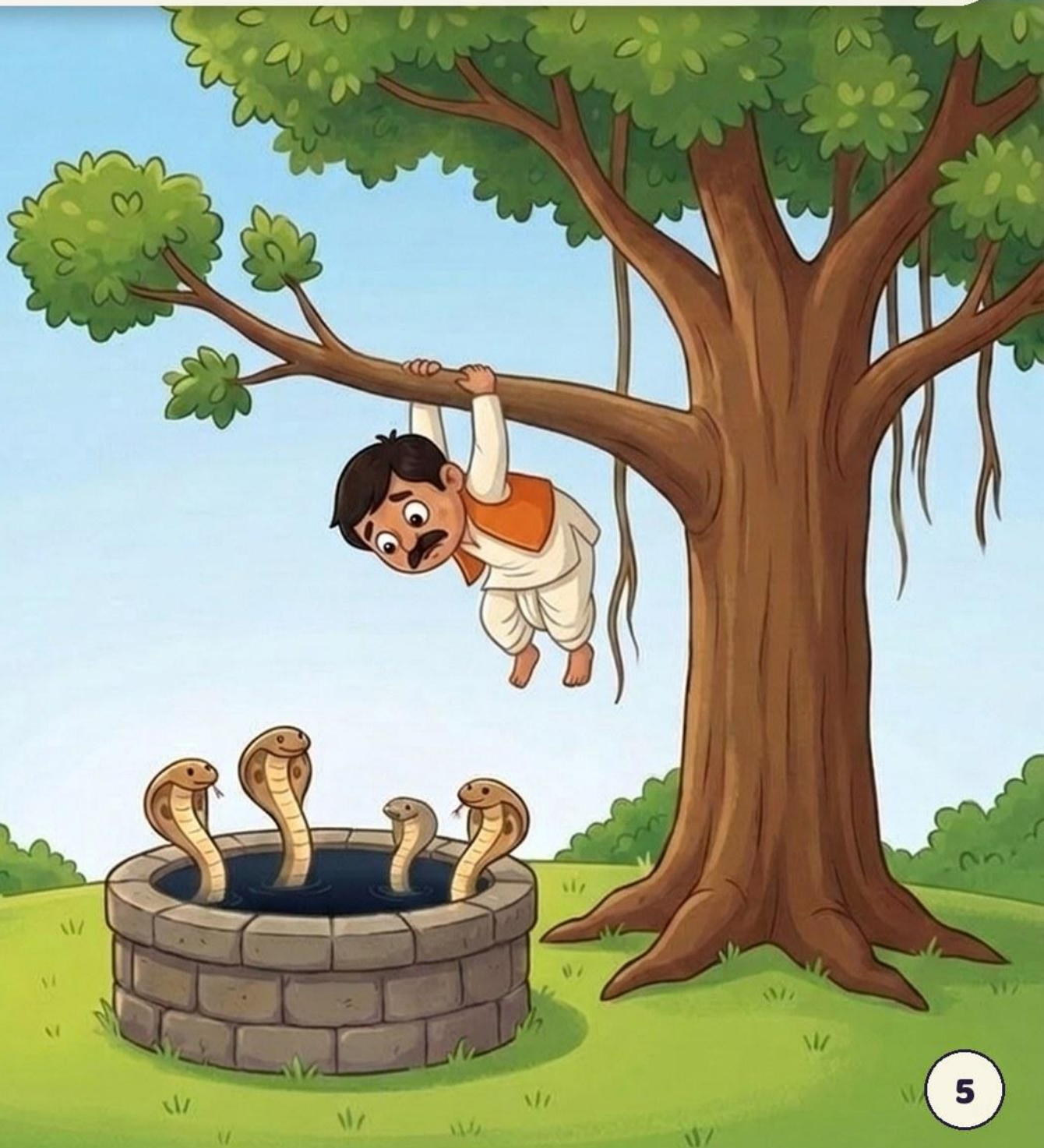
रामू घर जा रहा था, माँ राह देख रही थी।
पर घने जंगल में रास्ता खो गया।
धम! धम! धम! पीछे जंगली हाथी!





भागो रामू, भागो! दिल धक धक धक!
रामू ने बहुत बड़े पेड़ की डाली पकड़ ली,
इतना बड़ा कि न जड़ दिखे, न चोटी।

नीचे अँधेरा गहरा कुआँ,
जो उसमें गिरे, फिर कभी न निकले।
चारों ओर चार नाग, स्स्य! स्स्य!

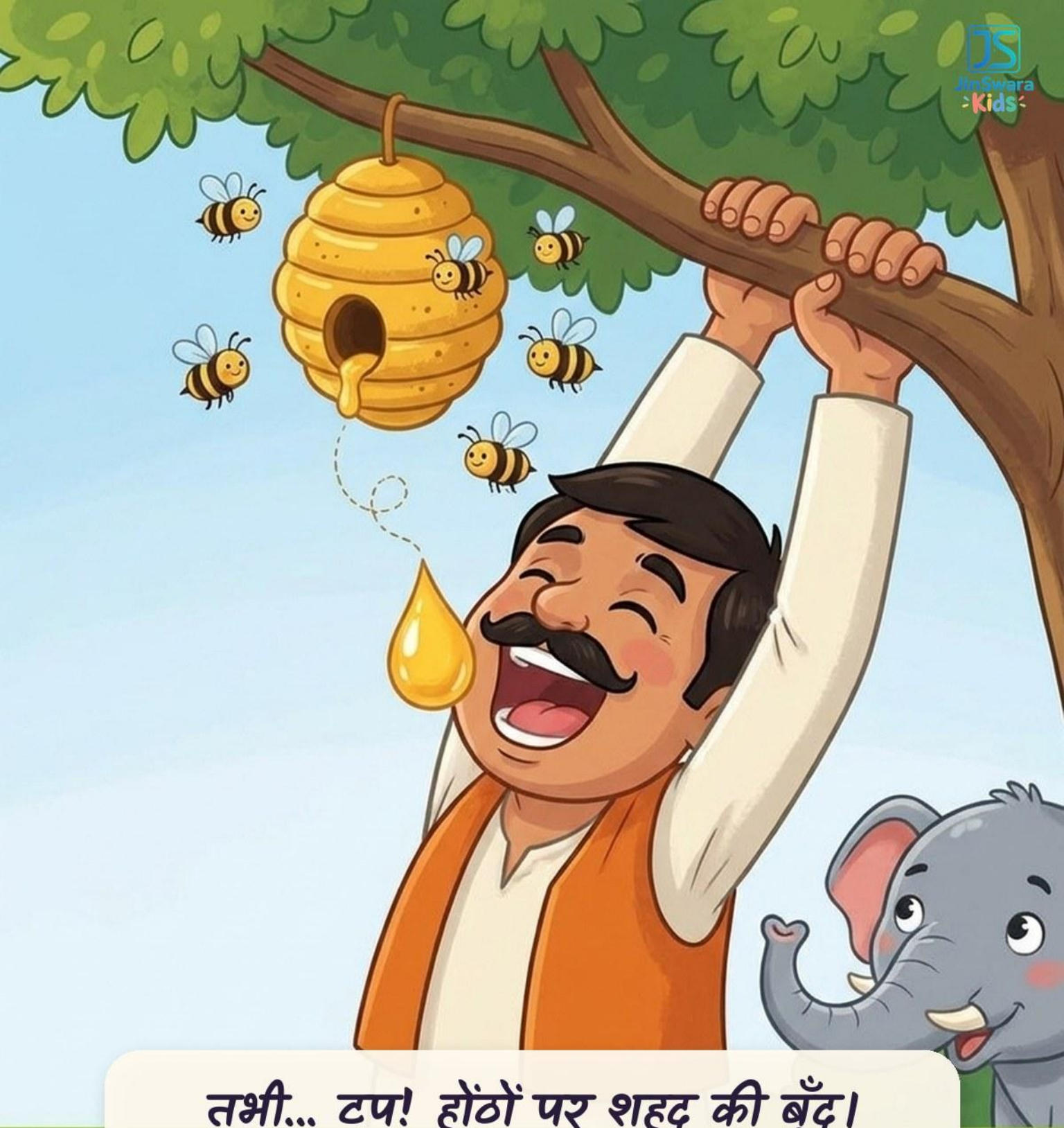




ऊपर सफ़ेद चूहा और काला चूहा।
कुटुर कुटुर! दिन बीते, रात बीते,
डाली पतली होती जाए।

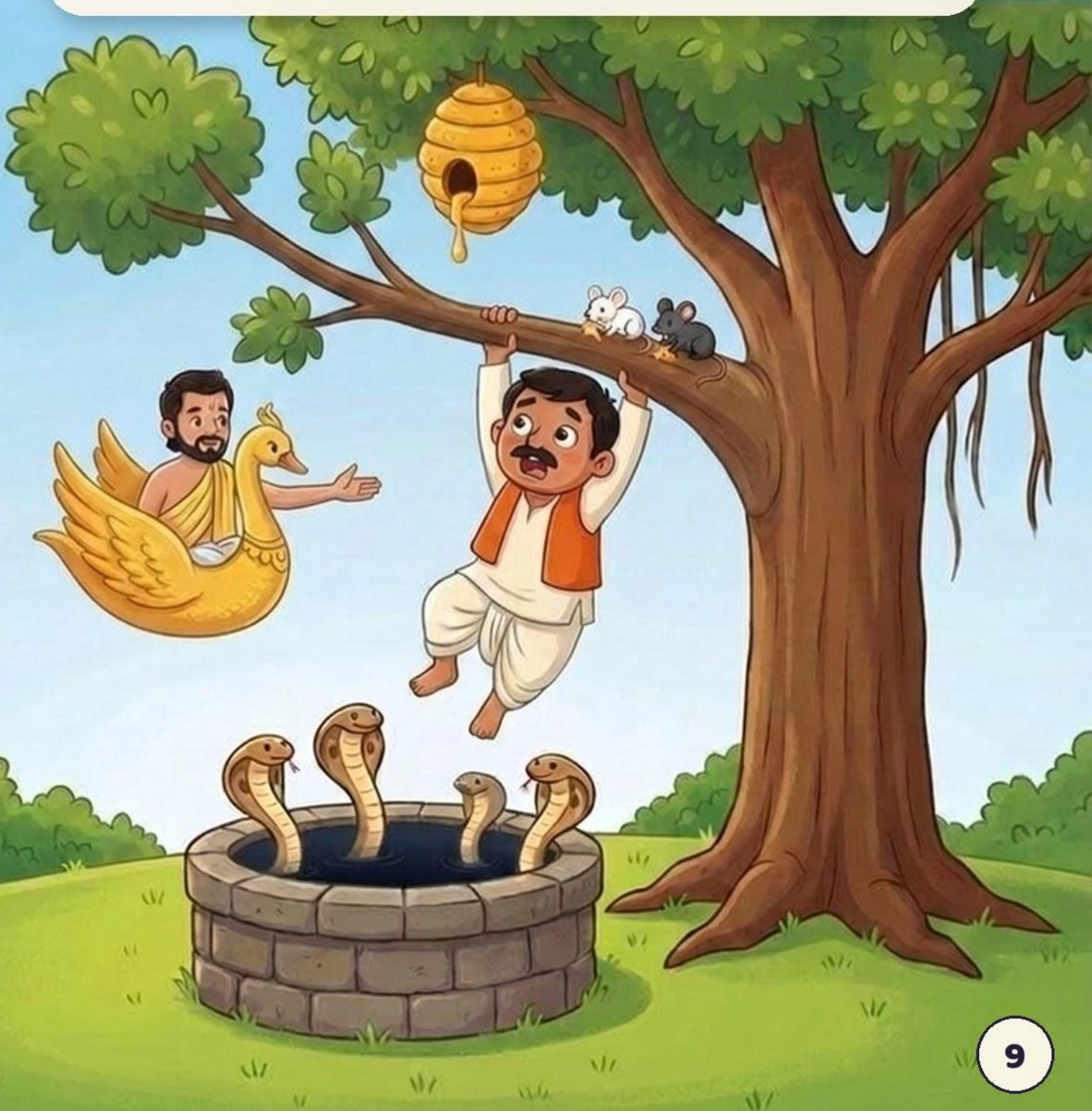
हाथी ने पेड़ झकझोरा, हिल हिल हिल!
मधुमक्खियाँ उड़ीं, भिन भिन भिन!
रामू काँप उठा।



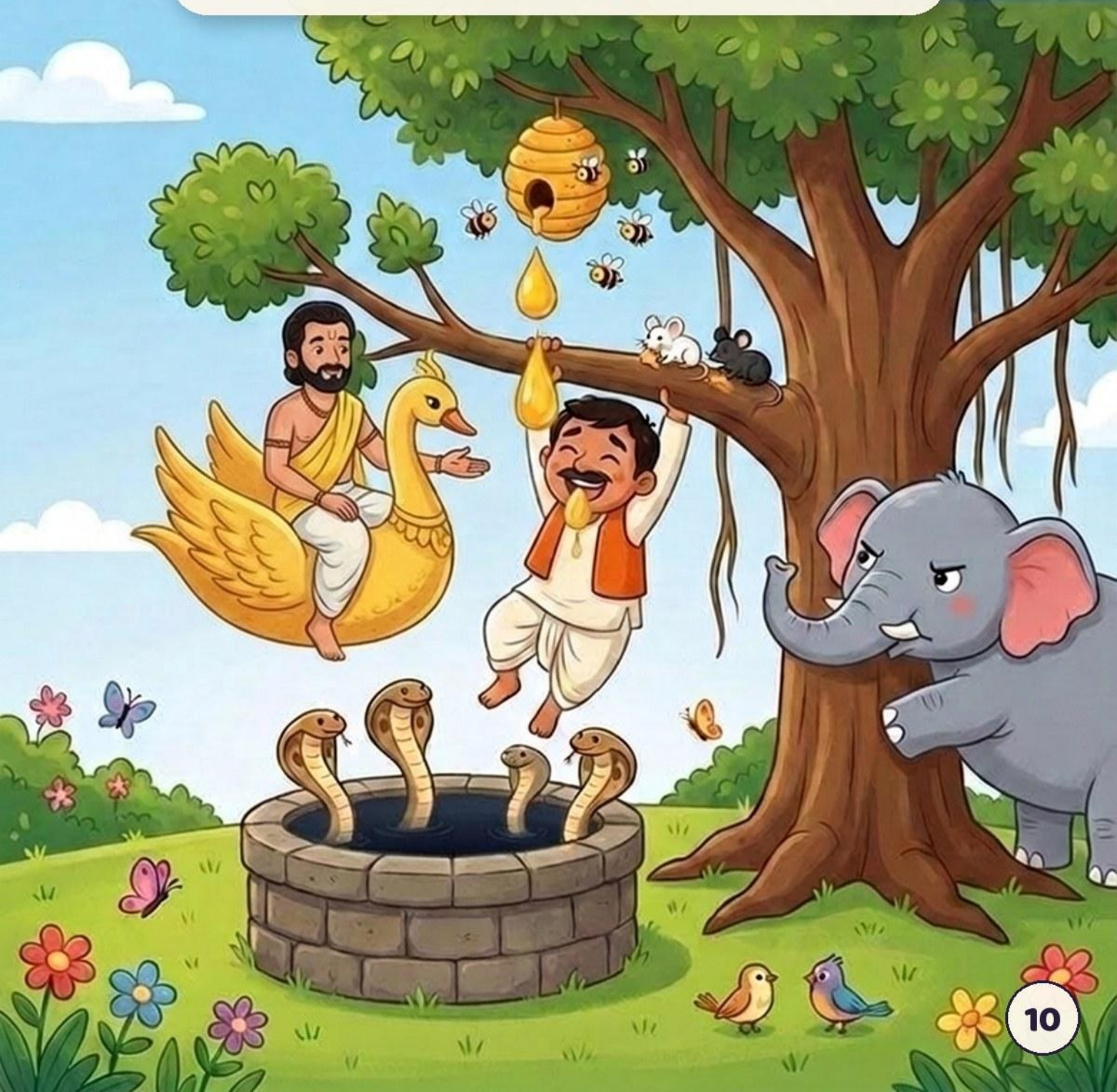


तभी... टप! होंठों पर शहद की बूँद।
मीठी! इतनी मीठी! रामू सब भूल गया।
"बस एक बूँद और!"

आकाश से विमान आया। विद्याधर बोले,
"रामू, हाथ पकड़ो, मैं तुम्हें घर ले चलूँ।"
"रुको... बस एक बूँद और!"



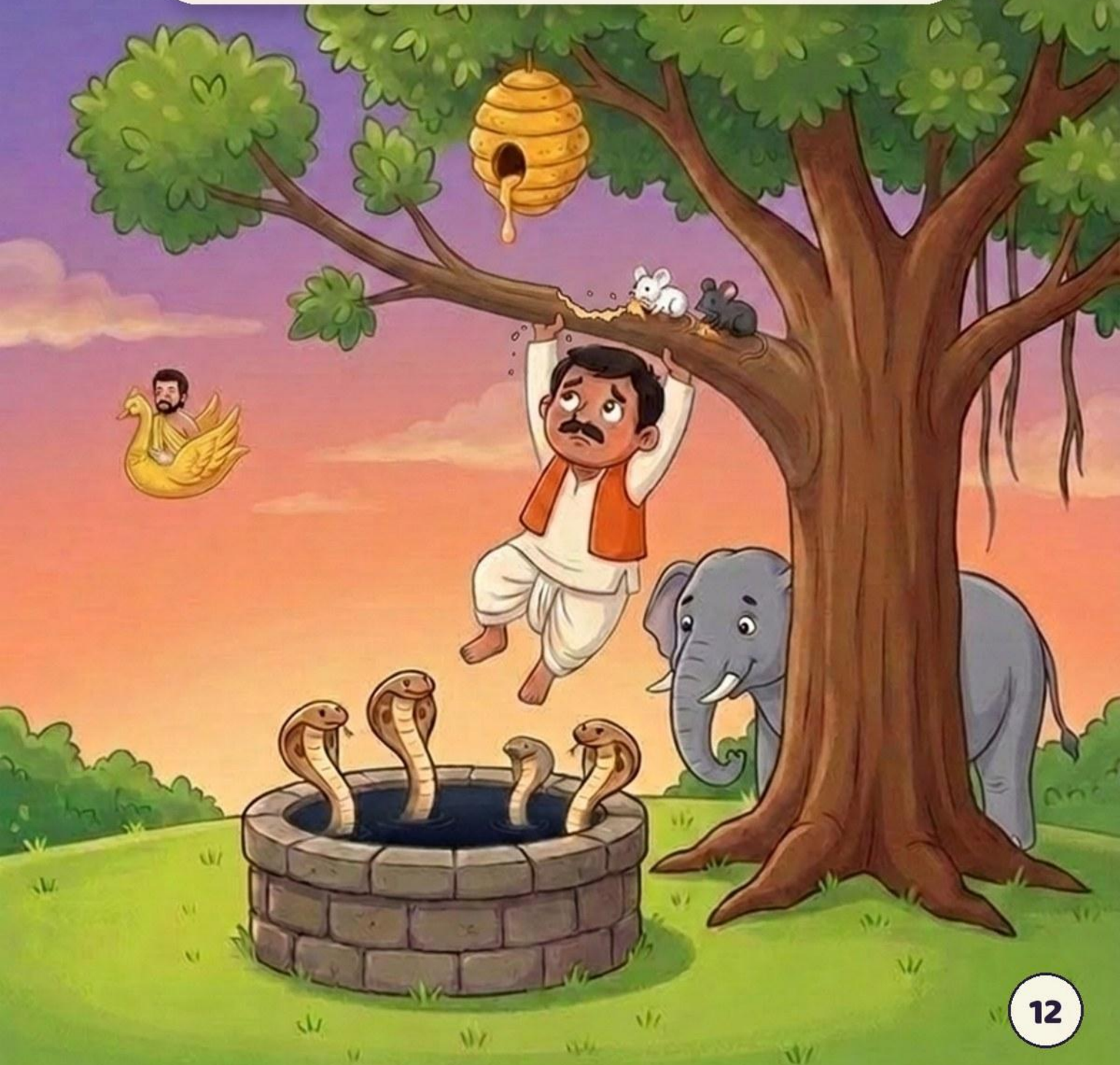
टप! बूँद आई, पर पहले से छोटी।
"आओ रामू, अभी समय है!"
"बस... एक बूँद और!"



कड़ कड़! डाली चरमराई।
"रामू, अब नहीं तो कभी नहीं!"
"बस... एक... बूँद... और..."



विमान धीरे धीरे दूर चला गया।
अगली बूँद आई ही नहीं।
रामू अकेला लटकता रहा।



चिटू चुप हो गया।
"दादी, रामू घर क्यों नहीं गया?"
"एक मीठी बूँद ने उसे रोक लिया।"



दादी ने समझाया...



पेड़ = संसार

जिसका न आदि, न अंत; हम सब इस पर लटके हैं



हाथी = मृत्यु

जो चुपचाप सबके पीछे आती है



डाली = आयु

हमारी उम्र, जो रोज़ थोड़ी घटती है



सफ़ेद काला चूहा = दिन रात

जो हर पल आयु कुतरते हैं



चार नाग = चार गति

नरक, तिर्यच, मनुष्य, देव: जहाँ भी जाओ, फिर जन्म

और...



कुआँ = निगोद

सबसे छोटा जीवन, गिरे तो निकलना बहुत मुश्किल



मधुमक्खी = चिंता

जो हमें घेरे रहती है



शहद = इंद्रियों का छोटा सुख

मीठा, पर बस एक बूँद, और फिर खत्म



विद्याधर = गुरु

जो हमें सच्चे घर, मोक्ष, ले जाना चाहते हैं

शहद अभक्ष्य है... परंतु इस जीव को गलत काम में सुख लगता है,
पर देखो! उसका फल बुरा होता है...

चिटू ने लड्डू की प्लेट दूर रखी।
"दादी, मैं रामू जैसा नहीं बनूँगा।
मैं गुरु का हाथ पकड़ूँगा!"



उस रात चिटू ने सपना देखा...
वह गुरु का हाथ पकड़े,
सच्चे घर की ओर उड़ रहा था।



संसार वृक्ष का सार

बड़ों और बड़े बच्चों के लिए

यह जैन शास्त्रों का मधुबिंदु दृष्टांत है, जो जम्बूस्वामी ने प्रभव को सुनाया था। हर चीज़ का अर्थ पेज 14 और 15 पर है। सार यह है:

1. संसारी जीव चारों ओर से दुखों से घिरा है: मृत्यु पीछे है, आयु रोज़ घट रही है, नीचे दुर्गति है।
2. फिर भी वह इंद्रियों के एक बूँद जितने सुख में सब भूल जाता है। जम्बूस्वामी कहते हैं, यह सच्चा सुख नहीं, बस सुख की कल्पना है।
3. सद्गुरु हाथ बढ़ाते हैं, पर हम "बस एक और" कहकर टालते रहते हैं, और समय निकल जाता है।

सीख: प्रमाद मत करो। गुरु का हाथ पकड़ो, धर्म करो, मोक्ष ही सच्चा घर है।

जम्बूस्वामी की कथा में चार नाग को चार कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) भी कहा गया है, जो जीव को दुर्गति में ले जाते हैं।



संसार वृक्ष

बूँद के पीछे मत भागो,
गुरु का हाथ पकड़ो।

बड़ों के लिए बच्चों से पूछें

1. हमारी शहद की बूँद क्या है?
2. रामू को क्या करना चाहिए था?
3. हमारे गुरु कौन हैं?